 ISSN NO :2455-4219

पहाड़ी चित्रकला मे नारित्व की अभिव्यंजना

डॉ० सचिव गौतम
सहायक आचार्य,
इंस्टिट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स,
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
9120670593
sachiv.1986@gmail.com

सारांश

लघु चित्रकारी भारतीय शास्त्रीय परंपरा के अनुसार बनाई गई चित्रकारी है। लघु चित्रों में नारी सुषमा से तात्पर्य है नारी चित्रण। लघुचित्रों में विभिन्न चित्रशैलीयों में अलग–अलग स्थानों पर अनेक प्रकार से नायिका चित्रण हुए हैं, तथा हर स्थान पर उसकी प्रकृति की भिन्नता को दर्शाता है। नारी चित्रण की भिन्नता ही इन शैलियों को एक दूसरे से अलग करती है। पूर्व मध्यकाल से उत्तर मध्यकाल के कालांतर के बीच इन लघु चित्रों का विकास हो चुका था, जिस प्रकार विभिन्न शैलियों के चित्रण होते गए उसी प्रकार उनसे प्रेरणा लेकर लघु चित्रों के क्षेत्र में विस्तृत व अनूठे चित्रांकन देखने को मिले। लघुचित्रों की कला शैली में नारी चित्रण की शुरुआत पाल शैली से मानी जाती है। पहाड़ी शैली में नारी चित्र अपने चरम शिखर पर पहुंच गई थी। इन सभी चित्र शैलियों से प्रेरणा लेकर काल्पनिक तरीके से नारी को अत्यंत सुंदर दिखाने का प्रयत्न किया गया है। पहाड़ी चित्रकला में मुगल दक्कन व राजस्थानी चित्रकला के विशिष्ट विशेषताएं पहाड़ी शैली में सम्मिलित है, पहाड़ी चित्रकला अपनी क्षेत्रीय विभाजन को स्पष्ट करती है। पहाड़ी कलम के चित्रों में नायक नायिका की रूप छवि देखी जा सकती है। नायिका के विभिन्न रूपों व उसके सौन्दर्य को पूर्ण रूप से प्रदर्शित करना पहाड़ी कला की विशेषता रही है। पहाड़ी चित्रकारों ने विविध प्रकार की साहित्यिक रचनाओं से प्रेरणा लेकर विविध प्रकार के विषय में बहुत से आराध्य देवी देवताओं को प्रकट किया, किंतु कृष्ण को राधा के साथ लीलाएं करते हुए चित्रित करना संभवतरू संपूर्ण पहाड़ी चित्रकला का प्रिय विषय था।

कला, संस्कृति की वाहिका है। भारतीय संस्कृति के विविध आयामों में व्याप्त मानवीय एवं रसात्मक तत्त्व उसके कला–रूपों में प्रकट हुए हैं। कला का प्राण है रसात्मकता। रस अथवा आनन्द अथवा आस्वाद्य हमें स्थूल से चेतन सत्ता तक एकरूप कर देता है। मानवीय संबन्धों और स्थितियों की विविध भावलीलाओं और उसके माध्यम से चेतना को कला उजागार करती है। अस्तु चेतना का मूल ‘रस’ है। वही आस्वाद्य एवं आनन्द है, जिसे कला उद्घाटित करती है। भारतीय कला जहाँ एक ओर वैज्ञानिक और तकनीकी आधार रखती है, वहीं दूसरी ओर भाव एवं रस को सदैव प्राणतत्वण बनाकर रखती है। भारतीय कला को जानने के लिये उपवेद, शास्त्र, पुराण और पुरातत्त्व और प्राचीन साहित्य का सहारा लेना पड़ता है। कला का मानक कला स्वरूप अपने आप में निहित हैं।

भारतीय चित्रकारी में भारतीय संस्कृति की भांति ही प्राचीनकाल से लेकर आज तक एक विशेष प्रकार की एकता के दर्शन होते हैं। प्राचीन व मध्यकाल के दौरान भारतीय चित्रकारी मुख्य

रूप से धार्मिक भावना से प्रेरित थी, लेकिन आधुनिक काल तक आते–आते यह काफी हद तक लौकिक जीवन का निरुपण करती है। आज भारतीय चित्रकारी लोकजीवन के विषय उठाकर उन्हें मूर्त कर रही है।

विश्व की चित्रकला में भारतीय चित्रकला अपना निजी व महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान है। चित्र की आकृतियाँ प्रकृति एवं वातावरण सबको निश्चित सीमा रेखाओं में अंकित किया गया है। अजंता की जग प्रसिद्ध भित्तिचित्र इस कला की अमर धरोहर है। बौद्ध, जैन, पाल, गुजरात, अपभ्रंश, राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी चित्रशैलियों ने भारतीय चित्रकला के गौरव को कई सदियों से सुरक्षित रखा है।

अजन्ता, बाघ आदि के भित्ति चित्रों के बाद भारत मे 9वीं शती में पाल व जैन शैलियाँ आरम्भ हुई। जिनमें ताड़ पत्रों पर छोटे चित्र बनाए गये। बाद में यह चित्र कागज के ऊपर भी बनाये गये। राजपूत शैली, मुगल शैली और समकालीन शैलियों में कागज (वसली) पर बनाये गये लघु चित्रों की परम्परा का ही विकास हुआ। इस प्रकार भारत में लघु चित्रों का प्रारम्भ जैन एवं अपभ्रंष शैली के चित्रों से माना जाता है। मध्यकाल (15वीं से 18वीं सदी) भारतीय लघु चित्रण का स्वर्णिम काल था जिसमें मुग़ल, राजपूत एवं पहाड़ी आदि शैलियाँ सम्मिलित हैं। राजस्थान में मेवाड़, मारवाड़, कोटा, बूँदी, जयपुर एवं किशनगढ़ आदि क्षेत्रों में लघुचित्र परंपरा विकसित हुई। इन्ही लघुचित्र परंपरा में पहाड़ी चित्रकला अपना अलग ही वैभव रखती है।

पहाड़ी चित्रकला स्कूल का विकास 17वीं से 19वी सदी के मध्य जम्मू से अल्मोड़ा और गढ़वाल एवं उप–हिमालयी क्षेत्र एवं हिमाचल प्रदेश में हुआ। प्रत्येक शैली में एक दुसरे से भिन्नता दिखाई पड़ती हैं। जैसे बसोली चित्रकला जो जम्मू और कश्मीर में बसोली से उत्पन्न हुई हैं में बड़े गहरे रंगों का प्रयोग होता हैं एवं कांगड़ा पेंटिंग् नाजुक एवं गीतात्मक शैली के होते हैं। कांगड़ा शैली अन्य स्कूलों के विकास से पहले पहाड़ी चित्रकला शैली का पर्याय बन गया था। कांगड़ा चित्रकला की शैली राधा और कृष्ण की चित्रों के साथ अपने शिखर पर पहुंच गई, जो जयदेव की गीत– गोविंद से प्रेरित थी।

पहाड़ी शैलीः एक परिचय

पहाड़ी चित्रकला का उद्‌भव मुगल चित्रकला से ही हुआ था। यदयपि इसे राजपूत राजाओं का भी सरंक्षण प्राप्त हुआ था। जिन्होंने इस क्षेत्र के कई हिस्सों पर राज्य किया और इस तरह से भारतीय चित्रकला में एक नई मुहावरे को जन्म दिया। पर्वतीय क्षेत्र में विकसित चित्रकला को पहाड़ी चित्रकला शैली के नाम से जाना जाता है। 17वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के मध्य बसौली, गूलर, कांगड़ा, कुल्लू, चंबा, मनकोट, नूरपुर, मंडी, जम्मू और कश्मीर तथा हिमालय के अन्य पहाड़ी भाग चित्रकला केंद्र के रूप में उभरे। यह सभी पहाड़ी चित्रकला क्षेत्र के रूप में जाने जाते हैं। यह बसोहली से आरंभ होकर अपरिष्कृत कला शैली गूलेर से कांगड़ा होते हुए भारतीय कला में एक अत्यंत परिष्कृत व उत्कृष्ट कला शैली के रूप में उभरी। पहाड़ी चित्रकला में मुगल दक्कन व राजस्थानी चित्रकला के विशिष्ट विशेषताएं पहाड़ी शैली में सम्मिलित

है, पहाड़ी चित्रकला अपनी क्षेत्रीय विभाजन को स्पष्ट करती है। पहाड़ी चित्रकला शैली का उद्‌भव अभी तक बहुत स्पष्ट नहीं है। शोधकर्ता लगातार इसके उद्‌भव व विकास की विवेचना करते रहे हैं हालांकि ऊपर उल्लिखित सभी केंद्रों में सभी विशेषताओं के साथ प्रकृति स्थापत्य व अलंकारिक चेहरे व अन्य विशेषताए प्रदर्शित की गई है।

मुगल व राजस्थानी चित्रकला शैली और पहाड़ी क्षेत्रों में मुगल व राजस्थानी दरबार के पहाड़ी राजाओं के साथ पारिवारिक संबंधों के उदाहरण स्वरूप जाने जाते हैं। अधिकांश विद्वानों का यह मानना है की पहाड़ी चित्रकला में परिवर्तन की शुरुआत मुगल चित्रशाला के प्रवासी कलाकारों से हुई। पहाड़ी कलाकारों के चित्रों में नैसर्गिक शैली की मनोहरिता स्पष्ट दिखाई देती है। तथ्यों के आधार पर इन चित्रों के विषय वस्तु में दैनिक अथवा राजाओं के जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों का चित्रण किया गया है।

पहाड़ी शैली के विकास में आनंद कुमार स्वामी के व्याख्यान एवं लेख अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। आनंद कुमार स्वामी ने पहाड़ी चित्रकला को राजपूत शैली का एक भाग माना है। भारत के प्रसिद्ध संग्रहालय जैसे पंजाब म्यूजियम, चंडीगढ़ नेशनल म्यूजियम, दिल्ली, भारत कला भवन बनारस, इंडिया म्यूजियम कोलकाता तथा विदेश के भी कुछ संग्रहालयों में पहाड़ी शैली के चित्रों का अनुपम संग्रह दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है। रामायण, महाभारत, पुराण, मार्कंडेय पुराण, गीत गोविंद, रागमाला, रसमंजरी आदि विषय राजस्थानी शैली में भी विविधतापूर्ण चित्रित होते रहे हैं। इस समय पहाड़ी कलाकारों ने उनसे प्रेरणा लेकर एवं विषय वस्तु ग्रहण कर अपने चित्रों में स्थान दिया है।

संस्कृत काव्य में गीत गोविंद को प्रमुख स्थान प्राप्त है जिसके लेखक जयदेव थे इस ग्रंथ में राधा कृष्ण के प्रेम व सौन्दर्य का वर्णन है। जिसके आधार पर पहाड़ी कलम के चित्रों में नायक नायिका की रूप छवि देखी जा सकती है। साहित्यिक विषयों के अतिरिक्त हीर रांझा, सोनी महिवाल, लोक गाथाओं से संबंधित चित्रों में भी नायिका चित्रण देखने को मिलता है। पहाड़ी चित्रकारों ने विविध प्रकार की साहित्यिक रचनाओं से प्रेरणा लेकर विविध प्रकार के विषय में बहुत से आराध्य देवी देवताओं को प्रकट किया, किंतु कृष्ण को राधा के साथ लीलाएं करते हुए चित्रित करना संभवतरू संपूर्ण पहाड़ी चित्रकला का प्रिय विषय था।

किशोरी लाल विद्या के शब्दों में कांगड़ा का विकास में मुगल शैली की छाप है। इसमें हिमालय की गरिमा है और कांगड़ा घाटी का प्राकृतिक सौंदर्य ही नहीं यहां के निवासियों विशेषतरू नारी का चित्रण हुआ है। सबसे अधिक कृष्ण लीला के विषय से संबंधित विषयों पर पहाड़ी शैली में चित्र बनाए गए हैं, इस श्रेणी में नारी व प्रकृति के चित्र को अधिक महत्व दिया गया है, इस शैली के प्रसिद्ध चित्रकारों में मनकू व मौलाराम थे।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में पंजाब और हिमालय की सुरम्य घाटियों में पनपी एक उन्नत शैली के चित्र प्राप्त हुए थे। यह चित्र मुगल शैली से संबंधित चित्रों से पूर्णता अलग थे। इन

कृतियों में पहाड़ी आत्मा का सौंदर्य वैभव और यौवन मुखरित हो चुका था। सिंधु घाटी से लेकर गंगा के उदगम तक अनेक छोटे–छोटे राज्य थे।

मुगल कलाकारों व मूल पहाड़ी चित्रों ने मिलकर एक आयाम वाली ष्पहाड़ी चित्रशैलीष को जन्म दिया। इस शैली का एक रूप बसोहली शैली दूसरा रूप गुलेर शैली व तीसरा कांगड़ा शैली, चंबा कुल्लू, जम्मू, मंडी, गढ़वाल के नाम से पनपी। कांगड़ा व बसोहली रियासतों में आश्रयहीन मुगल कलाकार पहुंचे ही थे। लेकिन उससे पूर्व ही गुलेर कलम का प्रभाव समस्त रियासतों में छा चुका था और यह बाहरी चित्रकार मुगल पहाड़ी एवं राजपूती वातावरण में फलने फूलने लगे। इसी प्रकार चित्रकला के प्रमुख आश्रयदाताओं मैं बसोहली के राजा कृष्ण पाल (1678–1694) गुलेर के गोवर्धनचंद्र (1730– (1764) चंबा के राजा उम्मेद सिंह (1748–1764) व कुल्लू के राजा प्रीतम सिंह (1767–1806) थे कांगड़ा के राजा घमंडचंद थे।[1]

पहाड़ी शैली के चित्रों में प्रेम का विशिष्ट चित्रण दृष्टिगत होता है कृष्ण राधा के प्रेम के चित्रों के मध्य से इनमें स्त्री पुरुष प्रेम संबंधों को बड़ी ही सहजता के साथ दिखाने का प्रयत्न किया गया है। वास्तव में इन कलाकारों को इन वादियों का शांत वातावरण मिला जिससे उनकी तूलिका को कल्पना की उन्मुक्त क्रीड़ा करने को मिली और उस क्रीडा के परिणाम स्वरुप पहाड़ी शैली के चित्रों में विषयगत कड़ियाँ जुड़ती चली गई।जयदेव कृत गीत गोविंद पहाड़ी चित्रकारों का मुख्य विषय रहा है। इसमें कृष्ण एवं राधा के उत्कट एवं भाव प्रणय में वियोग तथा संयोग की पीड़ा एवं आनंद का अनुपम समन्वय है। प्रेम भाव को समर्पित ये काव्य आत्मा एवं परमात्मा के संयोग की द्योतक है।[2]

पहाड़ी चित्रकला के प्रमुख चित्रों में एक नारी चित्रण की शुरुआत तो पहले ही हो चुकी थी उत्तर मध्यकाल व मध्यकाल के चित्रण में नारी के चित्रण के विषय की जानकारी मिलती है। वही चित्र आगे आने वाली शैलियों में विकसित विशेषताए देखने को मिलती है। पाल से पहाड़ी के बीच सभी शैलियों में नारी चित्रण का विकास क्रम चित्रकारों द्वारा बनाई गई प्रस्तुति में देखने को मिलता है। धीरे–धीरे करके वह नई–नई तकनीक रेखा वाली आत्मकथा के विकास के साथ नारी चित्रण को विकसित करते रहे। पहाड़ी चित्रकला में नारी चित्रण बहुत अधिक वास्तविकता के साथ बनाए जाने लगे थे यह विकास राजस्थानी व मुगल नारी चित्रण के फल स्वरुप विशेष रूप से राजस्थानी चित्र में नई आकृतियों को सहजता के साथ दर्शाया गया है इसी से पहाड़ी शैली में नारी चित्र को अधिक प्रेरणा प्राप्त हुई पहाड़ी कला में कांगड़ा शैली को रंग रूप देने का ऊंचाइयों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य करने वाली शैली गूलेर थी। गूलेर राज्य को मुगल संरक्षण प्राप्त था गूलेर के राजा रूपचंद को शाहजहां का समर्थन मिला उसके पश्चात राजा मानसिंह के समय तक कला का कार्य शिथिल ही रहा। उनके प्रमुख विषयों में धार्मिक चित्र, दरबारी चित्र, नायिका चित्र, व्यक्ति चित्र थे। गूलेर कलम के आरंभिक चित्र पंडित सेओ और उनके दो पुत्र मांगो और नैनसुख ने बनाई।

पहाड़ी लघु चित्रकला में अनेक अलग–अलग प्रकार की शैलियां पनपी। सभी शैलियां अपने–अपने क्षेत्र व विशेषताओं के कारण एक दूसरे से भिन्न थी, पहाड़ी लघु चित्र शैली व उप

शैलियां एक दूसरे से संबंधित है, सभी शैलियों में अन्य शैलीयों की कुछ विशेषताएं दृष्टिगोचर होती है।

पहाड़ी लघुचित्रों की आत्मीयता

लघु चित्रकारी भारतीय शास्त्रीय परंपरा के अनुसार बनाई गई चित्रकारी है। लघु चित्रों में नारी सुषमा से तात्पर्य है नारी चित्रण। लघुचित्रों में विभिन्न चित्रशैलीयों में अलग–अलग स्थानों पर अनेक प्रकार से नायिका चित्रण हुए हैं, तथा हर स्थान पर उसकी प्रकृति की भिन्नता को दर्शाता है। नारी चित्रण की भिन्नता ही इन शैलियों को एक दूसरे से अलग करती है।

पूर्व मध्यकाल से उत्तर मध्यकाल के कालांतर के बीच इन लघु चित्रों का विकास हो चुका था, जिस प्रकार विभिन्न शैलियों के चित्रण होते गए उसी प्रकार उनसे प्रेरणा लेकर लघु चित्रों के क्षेत्र में विस्तृत व अनूठे चित्रांकन देखने को मिले। यह सभी एक दूसरे से संबंधित व कुछ विशेषताओं में भिन्न है। लघु चित्रों की कला शैली में नारी चित्रण की शुरुआत पाल शैली से मानी जाती है। पाल शैली को नाग शैली व पूर्वी शैली के नाम से भी जाना जाता है। पूर्वी भारत के पाल तथा सेन राजा साहित्य और कलाओं के महान संरक्षक थे, उनके राज्य काल में सुंदर पांडुलिपिया चित्रित की गई। इस शैली के चित्र बंगाल, बिहार और नेपाल में लिखी गई। पाल शैली में बुद्ध के जन्म से लेकर मरण तक के सभी चित्रों व उनका गृहत्याग, महापरिनिर्वाण, धर्मचक्र प्रवर्तन, सभी मुद्राओं व चित्रों को ग्रंथों व चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है, बुद्ध की विभिन्न जातक कथाओं में जीवन की गतिविधियों के साथ–साथ नारी चित्रण व जातक कथाओं में नारियों का चित्रण पाया जाता है। बुद्ध की जातक कथाओं के विषय में अजंता में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है ठीक उसी प्रकार पाल शैली में अजंता के चित्रों से प्रेरित होकर चित्रांकन हुआ है, इस शैली के अधिकांश चित्र पोथियों में प्राप्त होते हैं। लघुचित्रों की कला शैली में नारी चित्रण की शुरुआत पाल शैली से मानी जाती है।

पाल शैली के बाद उत्तर मध्यकाल की शैली अपभ्रंश शैली में चित्रण होने लगे तथा जिस प्रकार चित्र शैलियों का निर्माण देश के अलग–अलग कोने में होते गए उसी प्रकार भिन्न– भिन्न प्रकार भी देखने को मिलते हैं। जैन शैली को अनेक नामों से जाना जाता है अपभ्रंश शैली, पश्चिमी शैली, गुजरात शैली आदि। भारत में कागज पर सर्वप्रथम चित्रण इसी शैली में प्रारंभ हुआ। जो सातवीं शताब्दी के पल्लव नरेश महेंद्रवर्मन के शासनकाल में बनी थी इस कला शैली में जैन तीर्थकरों पार्श्वनाथ, नेमिनाथ, ऋषभनाथ, महावीर स्वामी आदि के चित्र सर्वाधिक प्राचीन है, इस कला का नमूना जैन ग्रंथों के ऊपर लगी दफ्तियों या लकड़ियों की पटरियों पर भी मिलता है जिसमें सीमित रेखाओं के माध्यम से तीव्र भावाभिव्यक्ति वाली आँखों के बड़े सुन्दर चित्र बनाये गए हैं।

अपभ्रंश के बाद धीरे–धीरे लघु चित्रों का प्रचलन अब मुगल शैली पर अपनी छाप छोड़ने लगा पर यहां पर मुगल राजा की रानियों के नारी चित्रण बनने लगे जिसे मुगल शैली की कुछ विशेष महिला कलाकार बनाया करती थी। मुगल इतिहास की शुरुआत 1526 में मुगल साम्राज्य

के साथ हो गई थी, लघु चित्रकला की मुगल शैली का महान विकास अकबर के शासन में हुआ था अकबर ने अपने दरबार में सभी जातियों और गुना के चित्रकारों को संरक्षण दिया था। अकबर के बाद जहांगीर के शासनकाल तक चित्रकला और अधिक विकसित हुई जहांगीर के समय शांति और समृद्धि के कारण जहांगीर ने लघु चित्र के विकास का पूरा ध्यान दिया। शाहजहां के समय काल में कुछ नए परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित नहीं किया गया उसने भवन निर्माण पर ज्यादा ध्यान दिया शाहजहां के बाद औरंगजेब के सत्तारूढ़ होने के बाद उसने सभी प्रकार की दृश्य कला और अन्य ललित कलाओं पर प्रतिबंध लगा दिया और इस अवधि के दौरान मुगल चित्रकला का पतन हो गया।

मुगल के समकालीन लघु चित्र शैली राजस्थानी थी जो 16वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी के बीच फली फूली वह अपनी चित्रण के विशेषताओं के कारण एक भिन्न पहचान रखती थी। विशेष कर किशनगढ़ शैली में राजा सावंतसिंह के संरक्षण में निहालचंद नामक चित्रकार ने नारी चित्र में अलग पहचान प्राप्त की। राजस्थानी लघु चित्र शैली के बाद पहाड़ी शैली में लघु चित्रण देखने को मिलता है इस समय लघु चित्रण की परंपरा सभी शैलियों की तुलना में अधिक विकासशील थी। पहाड़ी शैली में नारी चित्र अपने चरम शिखर पर पहुंच गई थी। इन सभी चित्र शैलियों से प्रेरणा लेकर काल्पनिक तरीके से नारी को अत्यंत सुंदर दिखाने का प्रयत्न किया गया है। नारी सौंदर्य किशनगढ़ शैली की सबसे प्रमुख विशेषता है। प्रत्येक शैली में एक दूसरे से भिन्नता दिखाई पड़ती है जैसे बसोहली चित्रकला जो जम्मू और कश्मीर में बसोहली से उत्पन्न हुई है में बड़े गहरे रंगों का प्रयोग होता है एवं कांगड़ा के चित्र नाजुक एवं गीतात्मक शैली के होते हैं। कांगड़ा चित्रकला की शैली राधा और कृष्ण के चित्रों के साथ अपने शिखर पर पहुंच गई।

पहाड़ी शैली में अष्टनायिकाओं का चित्रण

नायिका भेद में कांगड़ा के चित्रकारों ने श्रंगार की भावपूर्ण दशा की सजीव झांकी प्रस्तुत की है इनमें नायिकाओं की 8 अवस्थाओं को दर्शाया गया है, जो निम्न है–

वासकाशज्जा, विरोहोत्कंठिता या उत्का, स्वाधीनभतृका,कालाहनतारिता, खंडिता, विप्रलब्धा, प्रोशिताभतृका और अभिसारिका।

अष्टनायिका अर्थात आठ नायिकाओं का चित्रण पहाड़ी चित्रकला में सबसे अधिक चित्रित विषयों में से एक है। नायिका का भारतीय कला और साहित्य में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, पहाड़ी कला ने नृत्य और प्रदर्शन कलाओं पर भरतमुनि द्वारा रचित संस्कृत ग्रंथ नाट्यशास्त्र में पहली बार परिकल्पित नायिका की अवधारणा के साथ पूर्ण न्याय किया है। चित्रकला के पहाड़ी शैली जिनमें कांगड़ा, गुलेर, बसोहली, चंबा, नूरपुर,गढ़वाल और मंडी शामिल हैं, कुछ अन्य जो उप–हिमालयी भारत में रियासतों से फले–फूले हैं, ने 17वीं से 19वीं शताब्दी के दौरान नायिका विषय पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया है।

कांगड़ा की नायिका गति में तरल है, प्रकृति से घिरी हुई है। प्रकृति के तत्वों को समृद्ध रंगों में कैद किया गया है। नरम रंगों में पृष्ठभूमि के साथ जंगल में बैठी नायिका उदास भी हो सकती है। नूरपुर और बसोहली के काम में चमकीले रंगों का उपयोग किया जाता है, जिसमें महिलाएं भव्य रूप से तैयार होती है। हर महिला में एक नायिका होती है। खासकर जब वह प्रेम में हो। प्रेम, क्रोध, अलगाव और निराशा में मानवीय भावनाओं की उत्सुकता इन लघु चित्रों के माध्यम से व्यक्त की जाती है। राधा को नायिका और कृष्ण को उनके नायक के रूप में दिव्य युगल विषय पहाड़ी चित्रों में बहुत लोकप्रिय रहा है।

अष्टनायिका चित्रण

1. वसकसज्जा

वसकसज्जा का अर्थ है, नायिका जो अपने प्रेमी की लालसा प्रतीक्षा में है, उसकी प्रतीक्षा कर रही है, रसमंजरी में भानुदत ऐसी नायिका का वर्णन करते हैं, इन कुछ संकेतों के साथ नायिका को प्रेम प्रतीक्षा करते दिखाया गया है।

"उसने अपने सारे गहने पहन लिए हैं उसके बालों के घने सिर पर सुगंधित स्वर्ण केतकी के पुष्पों से प्रज्वलित"

2. विरोहिकांथिता या उत्का

विरोहिकांथिता या उत्का का अर्थ है, जो अलगाव से व्यथित है एक नायिका जो उम्मीद कर रही है, अपने नायक (प्रेमी) की प्रतीक्षा में है, जो उससे मिलने की व्यस्तता के कारण घर आने में विफल रहा है वह पूरी तरह से निराश है।

3. स्वाधीनभतृका

यह नायिका ऐसी है जिसने अपने प्रेमी को वश में कर लिया है। यह उसकी बात सुनता है, महावर लगाता है, उसके पैरों पर लाख का रंग लगाता है, उसके माथे पर सिंदूर लगाता है। गीत गोविंद पर आधारित राधा के चित्रण में इसी तरह चित्रित किया गया है। ऐसी नायिका खुश और गौरवान्वित होती है।

4. कलाहनतारिता

कलाहनतारिता एक ऐसी नायिका है जो झगड़े के कारण अपने प्रेमी से बिछड़ जाती है या नाराज हो जाती है। कभी–कभी वह अपने अहंकार के कारण अलग हो जाती है। इस अवस्था में उसके प्रेमी को आमतौर पर उससे विनती करते हुए, या उसके घर को छोड़ कर जाते हुए दिखाया जाता है। उसे अपनी गलतियों को अस्वीकार करते हुए भी दिखाया जा सकता है। नायिका अपने प्रेमी के बिना पछता रही है।

5. खंडिता नायिका

वह नायिका है जो अपने प्रेमी से नाराज है क्योंकि उसका प्रेमी उसके पास नहीं आया है और शायद किसी अन्य महिला के साथ अपना समय बिताया है और वह उससे नाराज है। इस अवस्था में उसे नाराज और अपने प्रेमी को डांटते हुए दिखाया गया है।

6. विप्रलभदा

विप्रलभदा नायिका वह है जो एक कपटी नायिका है, जिसने अपने प्रेमी की प्रतीक्षा की है, उसे आमतौर पर अपने आभूषणों को फेंकते हुए दर्शाया गया है। वह निराश है और उसका दिल असंतोष से भरा है। प्रेमी द्वारा सन्देश भेजने पर भी उसकी प्रेयसी दिखाई न दे, वह विप्रलब्ध कहलाती है। वह दुखी और अपमानित महसूस करती हैं।

7. प्रोशिताभतृका

प्रोशिताभतृका एक ऐसी नायिका है जिसका एक यात्रा प्रेमी हैं परंतु वह उसके पास नहीं है और प्रेमी के साथ बिताए नायिका के अपेक्षित दिन पर वापस नहीं आते है। वह अकेली बैठी हुई या अपनी नौकरानियों से घिरी हुई है और उदास है। वह सजने—संवरने या अपने बालों में कंघी करने का काष्ठ भी नहीं उठाती। जिसका प्रेमी किसी महत्वपूर्ण व्यवसाय के लिए दूसरी जगह चला गया है, प्रोशिताभतृका के नाम से जानी जाती हैं। उसे एक ऐसी महिला के रूप में दर्शाया गया है जिसके प्रेमी ने उसे छोड़ दिया है।

8. अभिसारिका

अभिसारिका वह नायिका है जो अपने प्रेमी से चुपके से मिलने के लिए चलती है। उसे रास्ते में खतरों का सामना करते हुए दिखाया गया है जैसे जंगल में सांप और जानवर और आंधी—तूफान। उसे अक्सर अपने घर के दरवाजे से जाते हुए दिखाया जाता है, वह अपने गंतव्य तक पहुंचने की जल्दी में होती है। वह सिर्फ अपने प्रेमी से मिलना चाहती है जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

प्रेम से अभिभूत, वह जो अपने परिवार को पीछे छोड़ देती है और अपने प्रेमी से मिलने और जाने में शर्म महसूस करती है, उसे अभिसारिका माना जाना चाहिए।

नायिकाओं के आठ चित्रणों की अवधारणा नहीं बदली है और महिलाएं अभी भी प्रेम के विभिन्न चरणों में इन भावनात्मक अवस्थाओं से गुजरती हैं। सामाजिक संदर्भ बदल सकता है लेकिन भाव या भावना कालातीत है।

वसकाशज्जा

स्वाधीनभतृका

क्लाहनतारिता

खंडिता नायिका

संदर्भ ग्रंथ सूची

- रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान 2020
- डॉ० सरोज रानी, पहाड़ी चित्रकला का अनुशीलन, वाराणसी 2012
- लोकेशचंद शर्मा, भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, मेरठ 2018
- अविनाश बहादुर वर्मा, भारतीय चित्रकला का इतिहास, बरेली,1999